International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 22-12-2020; Accepted: 10-01-2021; Published: 12-02-2021
www.hindijournal.com
Volume 7; Issue 1; 2021; Page No. 46-52

शरद जोशी के व्यंग्य साहित्य का राजनैतिक सन्दर्भ

सुयश चाण्डक
Duke University, Durham, NC 27708, United States

सारांश
हिंदी साहित्य की व्यंग्य विधा में सशक्त लेखकीय उत्तरदायित्व के निर्वहन की बात आने पर मुझे सर्वप्रथम श्री शरद जोशी का ध्यान आता है। उन्होंने आजीवन अपने व्यंग्य के माध्यम से राजनीति, समाज और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में सकारात्मक परिवर्तन का सूत्रपात किया और प्रत्येक पाठक के हृदय में जागरूकता की छाप छोड़ दी। खासकर राजनीति पर उनका व्यंग्य मुझे अत्यंत प्रभावी और रोचक लगता है क्योंकि इसके द्वारा उन्होंने अकेले ही भारतीय राजनीति के सड़े-गले तत्वों को आड़े हाथों लिया, राजनैतिक प्रणाली को सुधार के लिए प्रेरित किया, नेताओं को उनके उत्तरदायित्व का बोध कराया और व्यंग्य जैसे अहिंसक हथियार की अपरम्पार शक्ति को सिद्ध किया।
जब मैंने सर्वप्रथम जोशी जी के व्यंग्यों का अध्ययन किया तो मेरे मन में उनकी इसी कुशलता के स्रोत को समझने की जिज्ञासा उठी। इसलिए मैंने उपर्युक्त विषय का चयन किया। इस निबंध में मैं यह विश्लेषित करना चाहता हूँ कि शरद जोशी ने अपने व्यंग्यों में राजनैतिक विसंगतियों पर किस प्रकार प्रहार किया है।
निबंध का आरम्भ मैं हिंदी व्यंग्य में शरद जोशी के स्थान की चर्चा द्वारा करूँगा। तत्पश्चात मैं राजनैतिक विसंगतियों पर आधारित जोशी जी की मुख्य रचनाओं की पहचान करूँगा। इस प्रकार की रचनाओं को फिर अपना कर्म-क्षेत्र बनाकर मैं इनका साहित्यिक अनुशीलन करूँगा और यह समझाऊँगा कि इन रचनाओं में शरद जोशी ने राजनीति की किन समस्याओं को रेखांकित किया है। मेरा मानना है कि इस प्रकार ही मैं अपने अनुसंधान प्रश्न के उत्तर की ओर बढ़ सकूँगा।
इस निबंध को लिखते हुए मेरा लक्ष्य कदापि यह नहीं है कि मैं किसी की भावनाओं को आहत करूँ, राजनीति पर छींटाकशी करूँ या राजनीति की किसी एक विचारधारा को बढ़ावा देकर किसी दूसरी को नीचा दिखाऊँ। मैं निष्पक्ष रूप से केवल और केवल साहित्य की बेहतर समझ के लिए शरद जोशी के व्यंग्यों को विश्लेषित करना चाहता हूँ। मुझे आशा है कि यह अनुसंधान मुझे न केवल व्यंग्य की प्रभावोत्पादकता के स्रोत से परिचित कराकर साहित्य पठन में और सक्षम बनाएगा परन्तु साथ ही मेरे लिए साहित्य द्वारा समाज सुधार और जन-हित का मार्ग प्रकाशित करेगा।

मूलशब्द: राजनीति, समाज और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में सकारात्मक परिवर्तन।

प्रस्तावना

हिंदी व्यंग्य में शरद जोशी

अपने समकालीन व्यंग्यकारों श्री हरिशंकर परसाई और श्री श्रीलाल शुक्ल के साथ श्री शरद जोशी का भी हिंदी व्यंग्य को साहित्यिक विधा के रूप में प्रतिष्ठा और मान्यता दिलाने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है[1]। इन महान लेखकों के व्यंग्य साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जहाँ परसाई जी ने व्यावहारिक राजनीति पर अपने व्यंग्य लेखन को केन्द्रित किया और शुक्ल जी ने अधिकतर प्रशासनिक भ्रष्टाचार को निशाना बनाया, वहीं जोशी जी ने व्यंग्य पत्रकारिता का सन्दर्भ लिए हुए राजनीति, नौकरशाही, बुद्धिजीवियों के प्रपंचों और आम नागरिक की परिस्थितिओं और मानसिकताओं पर अपने लेख को आधारित किया[2]।
शरद जोशी की विशेषता यह थी कि जीवन के प्रत्येक मोड़ पर वह अपने व्यंग्य की प्रेरणा ढूँढ लेते थे[3]। कहीं एक ओर प्रकृति में मौजूद छोटी-सी इल्ली उन्हें प्रेरित

[1] हिन्दीकुंज - भारतीय साहित्य में व्यंग्य विधा, हिंदी वेबसइट/लिटरेरी वेब पत्रिका, 2019, www.hindikunj.com/2019/08/bharatiya-sahitya-vyangya.html.

[2] हिन्दीकुंज - भारतीय साहित्य में व्यंग्य विधा, हिंदी वेबसइट/लिटरेरी वेब पत्रिका, 2019, www.hindikunj.com/2019/08/bharatiya-sahitya-vyangya.html.

[3] व्यंग्यर्षि शरद जोशी - वागीश सारस्वत, शिल्पायन, 2013

करती थी[4] तो वहीं दूसरी ओर उनका स्वयं का जीवन व्यंग्य के पनपते फूल में बदल जाता था[5]। अपने इस गुण के कारण ही शरद जोशी अपने समय के साधारण मानव की सोच और भावनाओं से जुड़ सके और उन तक ऐसा सन्देश पहुँचा सके जो आज के समय में भी प्रासंगिक है।

शरद जोशी की अगणित रचनाएँ अधिकतर व्यंग्य की विधा पर ही आधारित हैं[6]। व्यंग्य उनके लिए प्रत्येक भारतीय को सही पथ दिखाने का माध्यम था[7]। व्यंग्य उनके लिए अपने विचार प्रकट करने का मंच था और व्यंग्य ही सामाजिक अपराधों और राजनैतिक बुराईयों के विरुद्ध उनका हथियार था[8]। भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा ने सत्य ही कहा है, "हिंदी साहित्य में एक अद्‌भुत बात है – शरद जोशी को व्यंग्य के नाम से नहीं बल्कि व्यंग्य को शरद जोशी के नाम से जाना जाता है[9]।"

साहित्य विश्लेषक रमेश दवे जी द्वारा शरद जी पर लिखित समीक्षा के अनुसार शरद जी के व्यंग्यों को चार भागों में बाँटा जा सकता है। पहला, त्वरित व्यंग्य रचनाएँ अर्थात वह लेख जो तीव्र गति से बढ़ती कथावस्तु द्वारा पाठक तक सन्देश पहुँचाते हैं। दूसरा, शैक्षिक विसंगतियों पर आधारित लेख जो शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन लाने के लिए शिक्षा में उपयुक्त कदाचार को रेखांकित करते हैं। तीसरा, सामाजिक व आर्थिक समस्याओं पर आधारित रचनाएँ जो आम आदमी के नैतिक मूल्यों को उजागर करने का प्रयास करती हैं। चौथा, राजनैतिक विसंगतियों पर आधारित रचनाएँ जो राजनीति की समस्याओं पर प्रकाश डालती हैं। इस निबंध में चौथी श्रेणी की व्यंग्य रचनाओं का अनुसन्धान किया जाएगा।

उपर्युक्त बातें हिंदी व्यंग्य में शरद जोशी के सन्दर्भ को स्पष्ट कर हमारे मन में उनके व्यंग्य द्वारा राजनैतिक विसंगतियों पर किये गए प्रहार की समझ की स्थापना करती हैं। आगामी अनुसन्धान इसी समझ को विकसित करेगा।

राजनैतिक विसंगतियों पर आधारित शरद जोशी के प्रमुख व्यंग्य

शरद जोशी ने राजनैतिक विसंगतियों व विडंबनाओं पर एक से बढ़कर एक व्यंग्य की रचना की है। 'काली लक्ष्मी का प्रजातंत्र', 'मंत्री जी से भेंट' और ' सरकार का जादू' जैसी रचनाओं में उन्होंने राजनेताओं को भ्रष्टाचार और दुष्प्रवृत्तियों से संलिप्त दिखाया तो वहीं दूसरी ओर 'एक था गधा' और 'जीप पर सवार इल्लियाँ' जैसे व्यंग्यों में उन्होंने राजनीति के सामने आम आदमी की शक्तिहीनता पर ज़ोर दिया[10]।

राजनैतिक विडम्बनाओं पर आधारित शरद जोशी के कुछ प्रमुख व्यंग्य हैं 'प्रजातंत्र की जड़ें', 'समाजवाद - एक उपयोगी चिमटा', 'रावण एक कैबिनेट था', 'पचास साल बाद शायद', 'भावी कर्णधार', 'चुनाव में खड़ा आदमी', 'न खड़े होने का दर्द' और 'असंतुष्ट होने के बजाए युवक राजनीतिक में आगे'। अनुसन्धान में इसी प्रकार की रचनाओं का विश्लेषण किया जाएगा[11]।

शरद जोशी के व्यंग्यों का साहित्यिक अनुशीलन

साहित्य के किसी भी लेख के कुछ मूल तत्व उसके गुणों का निर्माण करते हैं[12]। इसलिए शरद जोशी के व्यंग्यों के साहित्यिक अनुशीलन के लिए उनकी रचनाओं के उद्देश्य, कथावस्तु, चरित्र-चित्रण और भाषा शैली (संवाद व विवरण में) जैसे मूल तत्वों का विश्लेषण अनिवार्य है। इस प्रक्रिया द्वारा ही हम यह समझ सकेंगे कि शरद जोशी ने अपने व्यंग्य साहित्य में किस प्रकार राजनैतिक विसंगतियों पर प्रहार किया है।

उद्देश्य

मनीषियों ने अकसर साहित्य को मनोरंजन और मानसिक विकास का मंदिर माना है[13]। परन्तु, शरद जोशी ने इससे बढ़कर साहित्य में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। उन्होंने व्यंग्य साहित्य का प्रमुख उद्देश्य परिवर्तन और समाज सुधार में बदल दिया। जोशी जी ने स्वयं ही कहा है कि व्यंग्य रचना उनके लिए एक "तरकीब" थी[14]। इसी तरकीब से उनका उद्देश्य स्पष्ट हो जाता है। चाहे 'नई दुनिया' समाचार पत्र का 'प्रतिदिन' कॉलम हो या लघुकथाओं का 'यत्र तत्र सर्वत्र'

4 जीप पर सवार इल्लियाँ - शरद जोशी, राजकमल पेपरबैक्स, 1990
5 मैं , मैं और केवल मैं - कमलमुख बीए - शरद जोशी
6 शरद जोशी (समीक्षा) - रमेश दवे, साहित्य अकादेमी, 2004
7 शरद जोशी (समीक्षा) - रमेश दवे, साहित्य अकादेमी, 2004
8 शरद जोशी के व्यंग्य साहित्य का अनुशीलन - शोधगंगा, 2002
9 शरद जोशी (समीक्षा) - रमेश दवे, साहित्य अकादेमी, 2004

10 शरद जोशी (समीक्षा) - रमेश दवे, साहित्य अकादेमी, 2004
11 व्यंग्यर्षि शरद जोशी - वागीश सारस्वत, शिल्पायन, 2013
12 हिन्दीकुंज - भारतीय साहित्य में व्यंग्य विधा, हिंदी वेबसइट/लिटरेरी वेब पत्रिका, 2019, www.hindikunj.com/2019/08/bharatiya-sahitya-vyangya.html.
13 हिन्दीकुंज - भारतीय साहित्य में व्यंग्य विधा, हिंदी वेबसइट/लिटरेरी वेब पत्रिका, 2019, www.hindikunj.com/2019/08/bharatiya-sahitya-vyangya.html.
14 शरद जोशी (समीक्षा) - रमेश दवे, साहित्य अकादेमी, 2004

के रूप में व्यंग्य संग्रह, शरद जोशी के लेखन का प्रथम उद्देश्य सदा सुधार और जागरूकता ही रहा है[15]। डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने भी इस बात का समर्थन करते हुए शरद जोशी के सन्दर्भ में कहा है, "उनकी व्यंग्य रचना टूटते हुए जीवन-मूल्यों के प्रति उनकी चिंता तथा छीना-झपटी और आडम्बरयुक्त संस्कृति के प्रति उनके आक्रोश को अभिव्यक्त करती है...उनकी रचनाएँ कमज़ोर लोगों की ताकत थी और मूक लोगों की आवाज़।"[16]

उद्देश्य समझने पर ही हमें एहसास होता है कि 'दो व्यंग्य नाटक' के हास्य के पीछे क्या अन्तर्निहित अर्थ छिपा है। उद्देश्य समझने से ही ज्ञात होता है कि क्यों शरद जी की 'मैं, मैं और केवल मैं' नामक आत्मकथा देखते-देखते राजनीति तथा अनेक अन्य विषयों पर किये गए व्यंग्य के रूप में बदल गयी ("दुःख यह है कि मैं किसी गुट में नहीं हूँ। इसी कारण मेरी रचना की वाह-वाह के मौखिक प्रमाणपत्र नहीं मिले।")। उद्देश्य के कारण 'अंधे-नेता' या 'स्वार्थी-नेता' हास्य से बढ़कर राजनीति पर प्रहार के रूप बन गए। इससे सिद्ध होता है कि राजनैतिक विसंगतियों को रेखांकित करने में शरद जोशी का पहला शस्त्र है उनका अनोखा उद्देश्य।

कथावस्तु

शरद जोशी की अधिकतर रचनाओं की कथावस्तु में एक समानता है। कहानियों में सर्वप्रथम यथास्थिति की समस्याओं की पहचान की जाती है। तत्पश्चात, कथावस्तु की घटनाओं के माध्यम से जोशी जी पाठक के मन में विस्मय उजागर करते हैं। प्रत्येक वाक्य कथावस्तु की समस्या की बढ़ती गंभीरता को दर्शाता है। सबसे विशेष बात तो यह है कि अंत में समस्या के समाधान के बदले केवल हास्य-व्यंग्य की कोई घटना घटती है और यथास्थिति में कोई बदलाव नहीं आता।

इसका उदाहरण 'हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे' व्यंग्य में देखा जा सकता है जहाँ शुरुआत से ही राजनीति के भ्रष्टाचार पर जोशी जी हमारा ध्यान केंद्रित करते हैं ("कहाँ पर नहीं खिल रहे हैं भ्रष्टाचार के फूल?"[17])। परन्तु अंत तक आते-आते भी वह यथास्थिति में कोई सुधार का संकेत नहीं करते ("कैसी प्रसन्न बैठी है काली लक्ष्मी प्रशासन के फाइलोंवाले कमल पत्र पर"[18])।

शरद जी की कथावस्तु की रचना की अद्भुत शैली का एक और उदाहरण 'पानी की समस्या' नामक व्यंग्य में पाया जा सकता है। व्यंग्य की कथावस्तु एक गाँव में पानी की कमी होने के इर्द-गिर्द स्थित है। शुरुआत में एक मंत्री समस्या सुलझाने आते हैं परन्तु जब वे गाँव वालों से एक अबोध बालक की भाँति प्रश्न पूछते हैं (जैसे कि "इस गांव में कितने लोग पानी पीते हैं?") तो जल्द ही पाठक को समझ आता है कि पानी की समस्या का समाधान शायद गाँव के नसीब में नहीं लिखा है। जैसे-जैसे कथावस्तु आगे बढ़ती है, कहानी में हास्य-विनोद, गाँव में यथास्थिति की गंभीरता और पाठक के मन में विस्मय भी बढ़ते हैं। परन्तु अंत में पाठक की शंका सत्य साबित होती है और गाँव को अपनी परेशानी का कोई उपयोगी समाधान नहीं प्राप्त होता[19]।

शरद जोशी इस प्रकार कथावस्तु के यथार्थवादी समापन के द्वारा मनोविज्ञान के मार्ग से अपना लक्ष्य हासिल करते हैं। अर्थात जब शुरुआत से अंत तक एक समस्या व्यंग्य के पात्रों को पीड़ित करती है परन्तु अंत में भी समस्या का कोई उपाय नहीं मिलता तो राजनैतिक विसंगतियों के सामने प्रश्न चिह्न लग जाता है और उन पर प्रहार करने में जोशी जी सफल होते हैं।

कथावस्तु की यह समानता केवल शरद जोशी के लेखों में ही नहीं बल्कि विश्व के और भी कई प्रसिद्ध लेखकों की रचनाओं में मौजूद है। वह चाहे 'चेखोव' हो या 'होगार्थ', सभी ने इस प्रकार कथावस्तु द्वारा अपने लक्ष्य को साधा है[20]। इससे सिद्ध होता है कि शरद जोशी की रचनाओं में उनकी कथावस्तु राजनैतिक विसंगतियों पर प्रहार करने का एक अमोघ बाण है।

चरित्र-चित्रण

अपनी रचनाओं में पात्रों को चारित्रिक रूप देते हुए शरद जोशी ने अगणित बार विद्रूप या 'कंट्रास्ट' पैदा किया है। अकसर पाठक की नज़र में एक पात्र शोषित आम आदमी का प्रतिनिधि दिखाई पड़ता है और दूसरा पात्र इसी शोषण का कर्ता बन बुराई को साक्षात् करता है। इस तुलना के द्वारा ही शरद जोशी राजनैतिक विसंगतियों को रेखांकित कर उन पर पूर्णतः प्रहार करते हैं।

चरित्र चित्रण की उपर्युक्त शैली के द्वारा ही जोशी जी 'जीप पर सवार इल्लियाँ' के भ्रष्ट अफसर और शोषित

---

[15] शरद जोशी (समीक्षा) - रमेश दवे, साहित्य अकादेमी, 2004
[16] शरद जोशी (समीक्षा) - रमेश दवे, साहित्य अकादेमी, 2004
[17] हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे (व्यंग्य) - शरद जोशी, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, 2004
[18] हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे (व्यंग्य) - शरद जोशी, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, 2004
[19] पानी की समस्या (कहानी) - शरद जोशी, राजकमल पेपरबैक्स, 1990
[20] वर्ल्ड लिटरेचर एनालिसिस - स्टेफेलस पीटर, द न्यू यॉर्क टाइम्स, 1988, www.nytimes.com/1988/04/03/weekinreview/world-literature.html.

किसान[21] और 'एक था गधा' के गधा समान राजा और विपत्तिओं से पीड़ित प्रजा जैसे पात्रों का चित्रण कर राजनैतिक विसंगतिओं पर प्रहार करते हैं[22]।

जोशी जी की इस विशेष शैली का सबसे बड़ा लाभ यह है कि शुरुआत से ही पाठक की संवेदना एक ओर आकर्षित होती है। उसे सही ओर गलत के बीच अंतर स्पष्ट नज़र आता है। वह भावनात्मक रूप से उस रचना से जुड़ जाता है। कथावस्तु में आगे जब अच्छाई का प्रतिनिधि-पात्र बुराई के प्रतिनिधि के कारण परेशानियों से व्याप्त निस्सहाय नज़र आता है तो पाठक जोशी जी के सन्देश को पहचानकर उसे अपने अन्तःकरण में ग्रहण करता है।

विद्रूपी पात्रों के बीच जब हास्य-व्यंग्य होता है तो पाठक पहले मुस्कुराता है, परन्तु दीर्घ काल में उसकी वही मुस्कान गंभीर मनन में बदल जाती है। इस तरह चरित्र-चित्रण द्वारा जोशी जी हमारे मन पर एक गहरा प्रभाव छोड़ जाते हैं – व्यंग्य पढ़ते हुए हम चाहे एक ही बार अफसर की लापरवाही या राजा की बेवकूफी पर ध्यान दें, व्यंग्य पठन के उपरांत हमारा मन बार-बार यह प्रश्न उठाता है कि हमारे आगामी जीवन में शासन करने वाले मंत्री व सरकार सक्षम और नैतिक है या नहीं। इस प्रकार चरित्र-चित्रण करने की अनोखी लेखकीय शैली द्वारा जोशी जी राजनैतिक विसंगतियों पर एक और शस्त्र के साथ प्रहार करते हैं।

भाषा-शैली

शरद जोशी की प्रत्येक रचना भाषा शैली के स्तम्भों पर खड़ी है। इसके बिना उनका हर व्यंग्य वैसे ही सूना पड़ जाएगा जैसे तीर के बिना कमान। भाषा शैली के प्रभावी प्रयोग से जोशी जी ने ऐसे लेखों की रचना की है जो मात्र व्यंग्य के रूप से ही भारत के राजनैतिक प्रबंध को डगमगा सकते हैं[23]। इस अद्भुत भाषा शैली के अंगो को नीचे विस्तृत रूप से समझाया गया है।

पाठकों की भावनाओं को जागृत करने के लिए शरद जोशी प्रत्येक स्थिति में सन्दर्भ-अनुसार उचित शब्दों का चयन करते हैं। उनकी विभिन्न रचनाओं में देशज, तत्सम्, तद्भव और विदेशी शब्दों का प्रयोग ही इस बात का प्रमाण है। एक ही कहानी 'जीप पर सवार इल्लियाँ' में पहले 'घोड़ी' जैसे देशज शब्द का प्रयोग होता है और आगे जाकर 'अमूल्य' और 'हास्य' जैसे तत्सम् शब्दों का प्रयोग होता है[24]। 'सरकार का जादू' जैसे व्यंग्य में शरद जी 'एप्लीकेशन टू गवर्नमेंट' और 'प्रोग्राम' जैसे अंग्रेजी शब्दों का प्रभावी ढंग से प्रयोग करते हैं[25]। ऐसे उदाहरणों से यह सिद्ध होता है कि शरद जी परिस्थिति के सापेक्ष उचित शब्दों का प्रयोग कर पाठकों की भावनाओं को जागृत करते हैं। इसके द्वारा पाठक राजनैतिक विसंगतियों की गहराई समझते हैं और जोशी जी अपने लक्ष्य में सफल होते हैं।

यमक अलंकार और व्यंजना शब्द-शक्ति जोशी जी की व्यंग्य से सराबोर रचनाओं के प्रमुख आधार हैं। द्विअर्थी व अनेकार्थी शब्दों और वाक्यांशों का प्रयोग जोशी जी के व्यंग्य नाटक 'एक था गधा' में तीक्ष्ण औजारों की तरह उनका सन्देश हम तक पहुँचाते हैं। पाठक जानता है कि नाटक का राजा वास्तव में एक गधा नहीं है परन्तु जोशी जी राजनैतिक विसंगति को दर्शाने के लिए उसकी तुलना एक गधे से कर रहे हैं[26]। यह अलंकार और शब्द-शक्ति प्रत्येक पाठक के ध्यान को शुरुआत से ही आकर्षित करते हैं और अंत तक उसे नाटक के सार पर केंद्रित कर देते हैं। इस प्रकार अपने उक्ति-वैचित्र्य के सफल प्रयोग से जोशी जी अपना लक्ष्य पूरा करते हैं।

रूपक और लक्षणा शब्द शक्ति का उचित प्रयोग भी शरद जी की भाषा-शैली की दो और युक्तियाँ हैं जो तुलनाओं और प्रतीकों के माध्यम से पाठक तक सन्देश पहुँचाती हैं। 'दो व्यंग्य नाटक' में यदि हम 'एक था गधा' से आगे बढ़कर 'अंधों का हाथी' पर ध्यान दें तो हमें रूपक का प्रयोग स्पष्ट नज़र आता है[27]। यहाँ जोशी जी ने अन्योक्ति रूपक के माध्यम से एक अंधे व्यक्ति और देश के नेताओं में तुलना की और व्यंग्यजनित विडम्बना का निर्माण किया। कुछ इसी प्रकार 'जीप पर सवार इल्लियाँ' में भी जोशी जी ने रूपक का प्रयोग करते हुए उपहास को निर्मित किया[28]। रूपक के प्रयोग की चर्चा जोशी जी के एक अति रोचक कथन का स्मरण कराती है, "बाढ़ और अकाल से मुर्गा बच जाए मगर वह मंत्रियों से सुरक्षित नहीं रह सकता है। बाहर भयंकर बाढ़ और अंदर लंच चलता है"[29]। यहाँ आम आदमी को मुर्गा समान माना गया है। इन उदाहरणों से ज्ञात होता है कि

[21] जीप पर सवार इल्लियाँ - शरद जोशी, राजकमल पेपरबैक्स, 1990

[22] एक था गधा, दो व्यंग्य नाटक (नाटक) - शरद जोशी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004

[23] शरद जोशी के व्यंग्य साहित्य का अनुशीलन - शोधगंगा, 2002

[24] जीप पर सवार इल्लियाँ - शरद जोशी, राजकमल पेपरबैक्स, 1990

[25] सरकार का जादू - शरद जोशी, राजकमल पेपरबैक्स, 1990

[26] एक था गधा, दो व्यंग्य नाटक (नाटक) - शरद जोशी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004

[27] एक था गधा, दो व्यंग्य नाटक (नाटक) - शरद जोशी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004

[28] जीप पर सवार इल्लियाँ - शरद जोशी, राजकमल पेपरबैक्स, 1990

[29] व्यंग्यर्षि शरद जोशी - वागीश सारस्वत, शिल्पायन, 2013

भाषा-शैली की शाखा में रूपक राजनैतिक विसंगतियों को रेखांकित करने का एक और महत्त्वपूर्ण संसाधन है।

अनुप्रास और पुनरुक्ति जैसे अलंकारों का प्रयोग करने के लिए शरद जोशी ने एक ही शब्द या एक ही व्यंजनित ध्वनि को बार-बार दोहराया है। इसका उदाहरण सर्वप्रथम 'हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे' और 'मैं, मैं और केवल मैं' जैसी प्रसिद्ध रचनाओं के शीर्षक में स्पष्ट रूप से नज़र आता है। भाषा-शैली का यह अलंकार अंग्रेजी में 'ऐलिटरेषन' के नाम से जाना जाता है और राजनैतिक विसंगतियों को रेखांकित करने के लिए यह एक उत्तम युक्ति है। शरद जोशी ने इन अलंकारों का अपने व्यंग्य साहित्य में इसलिए प्रयोग किया है क्योंकि किसी शब्द को दोहराने से उस पर लेखक का ज़ोर बढ़ता है और पाठक का ध्यान केंद्रित होता है। फलस्वरूप, 'भ्रष्ट' जैसा शब्द दुहराव के कारण हमारे अन्तर्मन में बैठ जाता है और हमें भ्रष्टाचार से सचेत करता है। इस प्रकार जोशी जी राजनीति की समस्याओं को रेखांकित करने में सफल रहते हैं।

अतिश्योक्ति अर्थात लेखन विधा में राई का पहाड़ बनाना शायद शरद जोशी जैसे व्यंग्यकार के लिए भाषा-शैली का सबसे महत्त्वपूर्ण अलंकार है। जो लेखक अतिश्योक्ति का प्रयोग करते हैं वे किसी छोटी सी स्थिति या समस्या को सन्दर्भ से कई गुना बड़ा बनाकर पेश करते हैं। भले ही यह तकनीक लेख को यथार्थवाद से थोड़ी दूर ले जाता है, यह लेखक को सक्षम रूप से न्यूनतम शब्दों में ही अपना सन्देश पाठक तक पहुँचाने का एक स्वर्ण अवसर देता है[30]। उदाहरण के लिए हम जोशी जी की अति प्रसिद्ध पंक्ति को याद कर सकते हैं, "जो दिखेगा, वही बिकेगा - यह जीवन का मूल मन्त्र है"[31]। वास्तव में शायद यह मन्त्र हमेशा प्रासंगिक नहीं है परन्तु इस अतिश्योक्ति के प्रयोग से शरद जी राजनीति में भ्रष्टाचार की व्यापकता को सरलता से दर्शाते हैं। इसी प्रकार 'सरकार का जादू'[32] जैसी रचना में शरद जी यह बताते हैं कि देश की देख-रेख और देश का सारा काम जादू से हो रहा है। हालाँकि असलियत यह है कि हम सब जादू को अतिश्योक्ति मानकर शरद जी की भावनाओं को समझते हैं – भ्रष्ट सरकार सत्ता पर नहीं बैठनी चाहिए क्योंकि मात्र जादू से देश की कोई भी समस्या नहीं सुलझ सकती है। शरद जोशी द्वारा उपयुक्त अतिश्योक्ति का एक और प्रभावी उदाहरण लेखक वागीश सारस्वत ने 'व्यंग्यर्षि शरद जोशी' नामक किताब में याद किया है, "उनका (नेताओं का) नमस्कार एक काँटा है, जो वे बार-बार वोटरों के तालाब में डालते हैं और मछलियां फंसाते हैं। उनका प्रणाम एक चाबुक है, हंटर है जिससे वे सबको घायल कर रहे हैं।"[33] वास्तव में यह प्रत्येक नेता की सच्चाई नहीं है परन्तु राजनैतिक भ्रष्टाचार के मूल बिंदु को स्पष्ट करने के लिए शरद जी ने इस बात को अतिश्योक्ति द्वारा समझाया है। मूल बात यह है कि अतिश्योक्ति प्रत्येक व्यंग्यकार के दिल के बहुत करीब है और यहाँ भी हमें बेशक ही भाषा-शैली में इसका महत्त्व समझ आता है। इसी कला के आधार पर शरद जी राजनैतिक विसंगतियों की निंदा को विनोद-भरे व्यंग्य में बदलकर आम पाठक तक पहुँचा पाते हैं।

भाषा शैली के इन तत्वों द्वारा जोशी जी अनेक तरीकों से अपनी व्यंग्य रचना पाठक के लिए रोचक बनाकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं। परन्तु इस बात पर ध्यान देना अनिवार्य है कि इन सभी तरीकों में से सबसे महत्त्वपूर्ण है हास्य-विनोद। जोशी जी ने स्वयं ही इस बात का विस्तार करते हुए समझाया है, "हास्य के माध्यम से कुछ बातें बहुत कम शब्दों में और बड़ी सरलता से कह देने में सफलता मिलती है। सामान्य पाठक बड़ी जल्दी विषय-प्रवेश कर जाता है और उसको जब इस बात का एहसास होता है कि इन सीधी-साधी बातों के पीछे गहरा तथ्य है, जो आखिर में कहा गया है, तो उसका 'शॉक' उसकी चेतना को झकझोरता है, बौद्धिक रूप से उत्तेजित करता है। अतः हास्य व्यंग्य का एक औजार हुआ, लक्ष्य नहीं।"[34]

हरिशंकर परसाई जी ने बड़ी ही खूबसूरती के साथ इन सभी बातों को समेटते हुए कहा है, "शरद बहुत ही समर्थ लेखक था। विडम्बना को पकड़ता था। छोटे-छोटे चुटीले वाक्य, मौजूँ मुहावरे, तीखी भाषा उसके गद्य को शक्तिशाली बनाती थी।"[35]

शरद जोशी द्वारा रेखांकित की गयी राजनीति की समस्याएँ

आजीवन व्यंग्य लेखन करते-करते शरद जोशी ने राजनीति में व्याप्त अनेक ज्वलंत समस्याओं को इस

[30] हिन्दीकुंज - भारतीय साहित्य में व्यंग्य विधा, हिंदी वेबसइट/लिटरेरी वेब पत्रिका, 2019, www.hindikunj.com/2019/08/bharatiya-sahitya-vyangya.html.

[31] लेखक शरद जोशी - हिंदी समय, 2015, www.hindisamay.com/writer/%E0%A4%B6%E0%A4%B0%E0%A4%A6-%E0%A4%9C%E0%A5%8B%E0%A4%B6%E0%A5%80-SHARAD-JOSHI.cspx?id=1478.

[32] जीप पर सवार इल्लियाँ - शरद जोशी, राजकमल पेपरबैक्स, 1990

[33] व्यंग्यर्षि शरद जोशी - वागीश सारस्वत, शिल्पायन, 2013

[34] शरद जोशी के व्यंग्य साहित्य का अनुशीलन - शोधगंगा, 2002

[35] शरद जोशी (समीक्षा) - रमेश दवे, साहित्य अकादेमी, 2004

प्रकार उजागर किया कि न तो उन्हें कभी हिंसा का प्रयोग करना पड़ा और न ही उन्हें नेता के रूप में राजनीति में प्रवेश करने की ज़रुरत पड़ी[36]। उनके द्वारा रेखांकित की गयी इन ज्वलंत समस्याओं को समझने पर ही यह पूर्णतः समझा जा सकेगा कि शरद जोशी ने किस प्रकार राजनैतिक विसंगतियों पर प्रहार किया है। मेरे अनुसार ऐसी चार मुख्य समस्याएँ हैं और इनका विश्लेषण नीचे किया गया है।

1. मंत्रियों व नेताओं द्वारा भ्रष्टाचार

भ्रष्ट मंत्री व नेता राजनैतिक विसंगतियों का एक मूल कारण हैं क्योंकि यह स्वयं ही पूरे तालाब को गन्दा कर सकते हैं। यही भ्रष्टाचार राजनैतिक व्यवस्था में एक विषचक्र पैदा करता है। 'समस्या सुलझाने में बुद्धिजीवी का योगदान' में शरद जी इस सन्दर्भ में लिखते हैं, "मैंने कहा - बुद्धिजीवी के नाते मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ? वे बोले - बुद्धिजीवी के नाते तो नहीं, हाँ गुण्डे-बदमाश के नाते आप मेरी जरूर मदद कर सकते हैं।"[37] कुछ इसी प्रकार 'नावक के तीर' में जोशी जी ने लिखा, ""राजनीति आजकल दो किस्म की हो रही है - एक सड़क पर चलने की राजनीति और दूसरी सड़क पर किसी को नहीं चलने देने की राजनीति।"[38] इस प्रकार जोशी जी पाठकों को एक व्यापक राजनैतिक विसंगति से सचेत करते हैं।

2. चुनाव में भ्रष्टाचार

चुनाव लोकतंत्र का एक अति महत्त्वपूर्ण स्तम्भ है परन्तु यह अकसर राजनीति में भ्रष्टाचार का मार्ग बन जाता है। जोशी जी ने अपने व्यंग्य में इस बात को दर्शाते हुए नेताओं के परिप्रेक्ष्य से लिखा, "आप हमें कुछ गालियाँ दे सकते हैं? हमें चुनाव के लिए कुछ गालियाँ चाहिए।"[39] जोशी जी चुनाव को ही राजनैतिक विसंगतियों के पनपने का स्थान मानते हैं। इसलिए उन्होंने चुनाव की स्वयंवर से तुलना करते हुए कहा, "भ्रष्टाचार की मछली को सत्ता के स्वयंवर में लक्ष्य बोध के लिए लटका दिया है।"[40] जोशी जी की इन बातों से स्पष्ट होता है कि वे लोकतान्त्रिक चुनाव को नहीं बल्कि उसके प्रति भ्रष्ट व्यक्तिगत सोच को इस राजनैतिक विसंगति का दोषी ठहराते हैं।

3. राजनीति द्वारा आम आदमी का शोषण

शरद जोशी की नज़र में कुछ राजनेता आम भारतीय नागरिक का शोषण करते हैं। 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' के समर्थक होने के नाते[41] वे पारदर्शी रूप से इस बात को अपने व्यंग्यों में रेखांकित करते हैं। उन्होंने ये काम 'जीप पर सवार इल्लियाँ' जैसी लघु कथाओं में बखूबी किया है। इसकी कथावस्तु में एक नेता और उनके अफसर इल्लियों द्वारा किसानों और खेतों को पहुँचायी गयी क्षति की जाँच-पड़ताल करने आये थे और वे स्वयं ही इल्लियों के रूप में किसान की खेती को मुफ्त में हड़प कर ले गए[42]। इन कहानियों के माध्यम से ही शरद जोशी आम आदमी को अपने हितों की रक्षा करने के लिए जागरूक करते हैं।

4. राजनीति में नैतिक मूल्यों का पतन

अपनी कई व्यंग्य रचनाओं में शरद जी ने राजनैतिक विसंगतियों के मूल कारण को रेखांकित करते हुए पाठक के सामने राजनीति में नैतिक मूल्यों के पतन को दर्शाया है। जोशीजी लिखते हैं, "मैंने एक नेता से पूछा - जी आपकी नजर में सबसे बड़ी समस्या क्या है? वह बोला - सबसे बड़ी समस्या तो एक बार जहाँ से चुनाव जीत गये, वहाँ से फिर जीतना है।"[43] कुछ इसी प्रकार अन्य व्यंग्यों में भी जोशी जी ने इस समस्या पर प्रकाश डालते हुए लोगों की नैतिकता को झकझोरा है[44]।

निष्कर्ष

अनुसन्धान से प्राप्त हुआ सार यह है कि श्री शरद जोशी अपने व्यंग्यों में राजनैतिक विसंगतियों पर प्रहार करने के लिए साहित्य के विभिन्न तत्वों का अत्यंत कलापूर्ण और सटीक प्रयोग करते हैं। व्यंग्य की रचना के दौरान उनके मन में सदा मनोरंजन या मानसिक विलास से बढ़कर समाज को सही पथ दिखाने का लक्ष्य होता है। इन बातों की तुलना करते हुए कहा जा सकता है कि शरद जोशी जी राजनीति की विसंगतियों के चित्रण में

---

36 व्यंग्यर्षि शरद जोशी - वागीश सारस्वत, शिल्पायन, 2013

37 समस्या सुलझाने में बुद्धिजीवी का योगदान, हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे (व्यंग्य संग्रह) - शरद जोशी, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, 2004

38 नावक के तीर (व्यंग्य संग्रह) - शरद जोशी, किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली, 2010

39 गालियाँ चाहिए, प्रतिदिन - नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली, 13 अगस्त 1989

40 यत्र तत्र सर्वत्र (व्यंग्य संग्रह) - शरद जोशी, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, 2009

41 शरद जोशी (समीक्षा) - रमेश दवे, साहित्य अकादेमी, 2004

42 जीप पर सवार इल्लियाँ - शरद जोशी, राजकमल पेपरबैक्स, 1990

43 समस्या सुलझाने में बुद्धिजीवी का योगदान, हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे (व्यंग्य संग्रह) - शरद जोशी, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, 2004

44 शरद जोशी - हिंदी साहित्य, हिंदी साहित्य चैनल, 2019, www.hindisahity.com/parteek-%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A5%80%E0%A4%95/.

पूर्णतः सफल रहे और उनका योगदान आगे न जाने और कितनी पीढ़ियाँ पहचानेंगी।

स्वयं को जोखिम में डालकर भी जोशी जी ने समाज के सामने राजनैतिक भ्रष्टाचार को उजागर किया। इसलिए आलोचकों ने उन्हें एक कर्मशील ओर संवेदनशील व्यंग्यकार जैसे खिताबों से सुशोभित किया है।

जिन तथ्यों और अवधारणाओं को शरद जी ने हमारे सामने रेखांकित किया है, वह कहीं न कहीं आज भी मौजूद और प्रासंगिक हैं। इस महान लेखक के कार्यों से हमें यही सीख मिलती है कि हम भी अहिंसा के माध्यम से इन परेशानियों का सामना कर सकते हैं। शरद जोशी जी ने राजनीतिक-व्यंग्यों द्वारा न केवल पाठकों को चेतावनी दी परन्तु साथ ही भ्रष्ट राजनेताओं के मन में डर पैदा किया, समाज में व्याप्त कई समस्याओं को सुलझाया और साहित्य में जीवित ज़मीर को एक नयी परिभाषा दी।

सन्दर्भ

1. जीप पर सवार इल्लियाँ - शरद जोशी, राजकमल पेपरबैक्स, 1990
2. हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे (व्यंग्य) - शरद जोशी, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, 2004
3. नावक के तीर (व्यंग्य संग्रह) - शरद जोशी, किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली, 2010
4. यत्र तत्र सर्वत्र (व्यंग्य संग्रह) - शरद जोशी, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, 2009
5. यथासंभव (चुने हुए 100 व्यंग्य लेख) - शरद जोशी, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, 2010
6. यथासमय (व्यंग्य संग्राह) - शरद जोशी, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, 2011
7. दो व्यंग्य नाटक (नाटक) - शरद जोशी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004
8. मैं , मैं और केवल मैं - कमलमुख बीए - शरद जोशी
9. शरद जोशी (समीक्षा) - रमेश दवे, साहित्य अकादेमी, 2004
10. व्यंग्यर्षि शरद जोशी - वागीश सारस्वत, शिल्पायन, 2013
11. शरद जोशी के व्यंग्य साहित्य का अनुशीलन - शोधगंगा, 2002
12. लेखक शरद जोशी - हिंदी समय, 2015, www.hindisamay.com/writer/%E0%A4%B6%E0%A4%B0%E0%A4%A6-%E0%A4%9C%E0%A5%8B%E0%A4%B6%E0%A5%80-SHARAD-JOSHI.cspx?id=1478.
13. शरद जोशी - हिंदी साहित्य, हिंदी साहित्य चैनल, 2019, www.hindisahity.com/parteek-%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A5%80%E0%A4%95%95/.
14. हिन्दीकुंज - भारतीय साहित्य में व्यंग्य विधा, हिंदी वेबसइट/लिटरेरी वेब पत्रिका, 2019, www.hindikunj.com/2019/08/bharatiya-sahitya-vyangya.html.